अध्याय - 1

प्रस्तावना

मानव जीवन का मूल भूत आधार वनस्पति है। मानव ने इन वनस्पतियों का प्रयोग अलग - अलग रूपों में किया होगा चाहे औषधियों के रूप में या अन्य रूप में लेकिन यह कह पाना कठिन ही है कि मानव ने बीमारियों के इलाज के लिए पौधों का उपयोग कब से किया होगा, शायद कई बार प्रयोग करने से उसे पता चला होगा कि इन वनस्पतियों में प्रयुक्त गुण जो अनेक बीमारियों का उपचार करते है। वह प्रक्रति की ही देन है इस आधार पर यह ज्ञान ही पारंपरिक चिकित्सा के रूप में विकसित हुआ होगा। इस आधार पर देखा जाये तो इथ्नोवॉटनी मानव उद्विकास का सबसे पहला विज्ञान रहा होगा। इथ्नोवॉटनी का सर्वप्रथम प्रयोग हर्शबर्गर ने 1895 में किया था ।

मानव पौधों का उपयोग औषधियों के रूप में प्रागैतिहासिक काल से करता आ रहा है इस आधार पर अनेक प्रमाण प्राप्त किए गये है जैसे 60,000 साल पुराने निएंडरथल मानव के दफनाने के स्थान पर सात प्रजातियों के पराग प्राप्त हुए है।

नृजाति-औषधि लगभग प्रत्येक समाज, विशेष तौर पर सरल अथवा जनजातीय समाजों में अलिखित स्वरूप में प्रचलित देखने को मिलती है।यह समाज द्वारा मान्यता प्राप्त सामाजिक - औषधि प्रणाली है, जो मौखिक स्वरूप में अथवा जन-परम्पराओं के माध्यम से विभिन्न - निषेधों, टोटम, आदि के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रहती है। यह पादप, जैव व आलौकिक तथ्यों पर आधारित होती है । जिनका प्रयोग सामाजिक-सांस्कृतिक व पर्यावरण तालमेल के साथ सम्पन्न होता है। नृजाति-औषधि एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न -भिन्न देखने को मिलती है।

चिकित्सा से आशय केवल उपचार या ईलाज पध्दति से नहीं है बल्कि एक नृजाति समूह विशेष में अपने परंपरागत ज्ञान, सामाजिक–सांस्कृतिक एवं पर्यावरण विभिन्नताओं के

अनुकूल स्वास्थ्य, बीमारी और उपचार पध्दति को किस प्रकार समझते है ।अपने परिस्थितिओं में मौजूद साधनों के द्वारा बीमारियों या रोगों का ईलाज किस प्रकार करते है वे सभी आयाम नृजाति चिकित्सा के अंतर्गत आते है।

नृजाति चिकित्सा मेँ मानवशास्त्रियों का योगदान -

डब्लू.एच.आर.रिवर्स- रिवर्स एक ब्रिटिश मानव शास्त्री थे । वे शायद प्रथम व्यक्ति थे (मानवशास्त्र के क्षेत्र मेँ) जिन्होंने संस्कृति और चिकित्सा के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी स्थापित की। उनकी दो महत्वपूर्ण पुस्तकें 'मेडीसन मैजिक एंड रीलिजन,(1924) और 'साईकोलॉजी एंड इथनोलॉजी (1926)। उन्होनें चिकित्सा संबंधी विश्व दृष्टि (अर्थात संसार के प्रति धारणा) को तीन भागों मेँ विभाजित किया – 1.प्राकृतिक 2.धार्मिक (धर्म) 3.जादुई जादू । उन्होने इन सब का सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से सबंध व्यक्त किया। उनकी दिलचस्पी लोक संस्कृति मेँ निहित बीमारी के उपचार के पीछे उपस्थित जादुई कारणों मेँ थी। उन्होने यह निष्कर्ष निकाला कि 'चिकित्सा की कला कुछ मायनों मेँ हमारी चिकित्सा से अधिक तर्कसंगत है यहाँ उपचार की प्रक्रियाएं अधिक प्रत्यक्ष रूप से बीमारी के कारणों के विचारों से उत्पन्न होती हैं ।'

रिवर्स के अनुसार के अनुसार जादू , धर्म और चिकित्सा गतिहीन अवधारणायेँ नहीं हैं, बल्कि सामाजिक प्रक्रियाओं का एक क्रम है जिसमें वे सभी प्रक्रियाएं जटिलता से एक दूसरे से जुड़ी हुई है ।

क्लिमेंट्स-तीसरे दशक (अर्थात 1930) मेँ फारेस्टर क्लिमेंट्स का महत्वपूर्ण योगदान है । क्लिमेंट्स का प्रमुख कार्य 'प्रीमीटिव कॉनसेप्ट ऑफ डीज़ीज'(1932) मेँ प्रकाशित हुआ था। वह विसरण की प्रक्रिया मेँ विश्वास रखते थे और उन्होने 'संस्कृति विशेषक' की पद्धति का प्रयोग किया। उनका मुख्य उद्देश्य विभिन्न मान्यताओं के परिपेक्ष्य मेँ भौगोलिक विस्थापना के

बारे में ज्ञान प्राप्त करना था | उनके अध्ययन का संबंध इन विशेषताओं के विस्तृत सारणीकरण से है, जो कि बीमारी के कारण के रूप में चिकित्सा पध्दति से जुड़ी है |

बी.डी.पॉल – पांचवे दशक (1950) में चिकित्सा मानवशास्त्र के क्षेत्र में पॉल के कार्य प्रमुख रहे है | यह माना जाता है कि पॉल ने अनुप्रयुक्त चिकित्सा मानवशास्त्र की नींव रखी | पॉल के अनुसार आदिम और आधुनिक चिकित्सा की भिन्नता वैध नहीं है, क्योंकि इन दोनों में कई स्तरों पर परस्पर संबंध है पॉल का महत्वपूर्ण कार्य – 'हेल्थ, कल्चर एंड कंम्यूनिटी'(1955) था | पॉल ने उस क्षेत्र का विश्लेषण किया है जहाँ समुदाय और चिकित्सा के बीच परस्पर संबंध है

(चिकित्सा मानवशास्त्र भाग - 1)

भारत में चिकित्सा मानवशास्त्री अध्ययन – भारत में चिकित्सा पध्दति का अध्ययन मान्यताओं और कार्यों के आधार पर अलग –अलग समय में प्रस्तुत किया गया है इन्हीं में से कुछ अध्ययन इस प्रकार देखे जा सकते है –

वी. इलविन (1939) में मंडला के जनजातिय क्षेत्र में प्रथम चिकित्सा केंद्र खोला | उन्होने जनजाति संस्कृति का उसकी संपूर्णता में अध्ययन किया, एवं स्वास्थ्य और चिकित्सा के संस्कृति से संबंध की व्याख्या की | उन्होंने उड़ीसा के पहाड़ी सौरा जनजाति में शमन की भूमिका का वर्णन किया | अपने कार्य में उन्होंने विभिन्न बीमारियों से संबंधित देवी – देवताओं का भी ब्यौरा दिया है |

ऑस्कर लुईस (1958) ने दिल्ली के पास स्थित रामपुर गाँव में काम किया | उन्होंने छोटे समुदाय के लोगों द्वारा प्रयुक्त चिकित्सा तकनीकों का दिलचस्प वर्णन किया है | ग्रामवासी

---

1. झा., प्रफुल्ल रंजन, दीपशिखा बरनवाल एवं राजकिशोर झा (2002). ''मानवशास्त्र भाग-1 (सामाजिक मानवशास्त्र)''. दिल्ली; पीयूष पब्लिकेशन्स.

परिणामवादी मानसिकता दर्शाते हैं, और वे पारंपरिक या पाश्चात्य चिकित्सा में से जिसका भी परिणाम अच्छा हो, उसका चुनाव कर सकते हैं | लुईस ने बीमारी के कारणों के विभिन्न सिद्धांतों का अध्ययन किया और स्थानीय मान्यताओं और व्यवहार महत्व को दर्शाया |

रिजवी(1968) ने देहरादून की जौनसरी जनजाति में स्वास्थ्य क्रियाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया | उनके अध्ययन के अनुसार ये लोग विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए कई घरेलू उपचारों का प्रयोग करते हैं | कुछ रोगों के लिए वनस्पतिशास्त्री का परामर्श भी लिया जाता है | इस इलाके में चिकित्सा सुविधाये अपर्याप्त हैं, पर लोग इनके प्रति भी लापरवाह है | 'इलनैसे' की अभिव्यक्ति की धारणा का संबंध अप्रत्यक्ष कारणों से है –'ईलनैस' के अलौकिक या जादुई कारणों को वास्तव में वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता | स्थानीय दवाइयों पर उन्हें कोई पैसा खर्च नहीं करना पड़ता, या इस पर वे लोग बहुत कम खर्चा करते है, जबकि आधुनिक चिकित्सा पर उन्हें कभी धन खर्च करना पड़ता है

साहित्य पुनरावलोकन

शोध कार्य से संबंधित विषय पर पूर्व में किए गए कार्यों का पूर्वावलोकन कभी-कभी शोध प्रविधियों के चयन एवं शोध के उद्देश्य का निर्धारण करने सहायक होता है एवं नये विचार भी प्रदान करते है शोध कार्य के विषय में, इसी आधार पर साहित्य पूर्वावलोकन अतिआवश्यक है शोधकर्ता के लिए Donald Pollock ने "Medical Anthropology Quqrterly" नामक जर्नल में प्रकाशित लेख "Personhood and Illness among the Kulina" में संस्कृति का स्वास्थ्य पर महत्व को बताते हुए कहा है कि किस प्रकार संस्कृति किसी व्यक्ति में किस प्रकार

[2]बीमारी की समझ को विकसित करता है।

---

2. [2] Pollock, Donald. "Personhood and Illness" Journal of Medical Anthropology , New series, Vol. 10, No 3, sep. 1996. 319-341

Jameel A.Abbas Ahmed A. EI. Oqlah Aclel M Mahasneh ने "Economic Botany" नामक जर्नल में प्रकाशित लेख "Herbal Plants in the Traditional Medicine of Bahrain" में Bahrain में पाये जाने वाले 52 औषधीय पौधों का अध्ययन करके बताया कि इनमें से 20 प्रजातियां देशज हैं, जिनका प्रयोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों में पारम्परिक चिकित्सा के रूप में किया जाता है, इन औषधीय पौधों का प्रयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है।

Dr. Surendra और Dr. P.D. Mishra ने अपनी पुस्तक "Health and Diseases-Dynamics and Dimentions" में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य की अवधारणओं की चर्चा की है, जैसे शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य,सामाजिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक स्वास्थ्य, व्यावसायिक स्वास्थ्य, शालेय स्वास्थ्य इत्यादि।

Ommachan (1989) ने "The Flora of Bhopal" में मध्य प्रदेश के 20 जिलों के जनजाजीयवन्य क्षेत्रों का इथ्नोबॉटेनिकल अवलोकन किया | तथा उनका वर्णन किया इस पुस्तक में

डॉ. निवेदिता शर्मा के अनुसार (1999) ने अपनी पुस्तक "सामाजिक – सांस्कृतिक मानव विज्ञान" में नृजाति – औषधि का वर्णन करते हुये कहते है कि नृजाति – औषधि लगभग प्रत्येक समाज, विशेष तैर पर सरल अथवा जनजातीय समाजों में अलिखित स्वरूप में प्रचलित देखने को मिलती है | यह समाज द्वारा मान्यता प्राप्त सामाजिक – औषधि प्रणाली है, जो मौखिक स्वरूप में अथवा जन – परम्पराओं के माध्यम से विभिन्न – निषेधों, टोटम, आदि के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रहती है |

प्रफुल्ल रंजन, दीपशिखा बरनवाल झा (2002).ने अपनी पुस्तक "मानवशास्त्र भाग-1" में मानव चिकित्सा का वर्णन करते हुये कहा है कि आरम्भ से ही मानवशास्त्रियों में पारंपरिक समाज के सदस्यों की चिकित्सा संबंधि मान्यताओं और प्रक्रियाओं के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा रही है |

Jan Salick, Anja Byg, Antony Amend, Bee Gunn, Wayne Law Heidi Schmidt ने "Economic Botany" नामक जर्नल में प्रकाशित लेख "Tibetan Midicine Plurality" में तिब्बत के चिकित्सीय बहुलता का विवरण दिया है।

डॉ. विजय चौरसिया (2009) ने अपनी पुस्तक "प्रकृति पुत्र बैगा" में बैगा जनजाति का वर्णन करते हुये कहते है कि बैगा जनजाति सभ्य दुनिया की तमाम क्रत्रिमताओं से दूर सभ्यताजनित अनेक वर्जनाओं और आडंबरों से परे एक कतई अलग संसार है बैगाओं का इनका जीवन, रहन – सहन, खान-पान,बोलचाल,आधुनिक मानव से बिलकुल ही भिन्न है |

डॉ.एम.सी.वर्मा.(2010) ने अपनी पुस्तक "आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा रोगों का उपचार" में आयुर्वे के बारे में उल्लेख किया है उनके अनुसार होमो' शब्द से ही 'होमियोपैथी' शब्द की रचना हुई

Jan Salick, Anja Byg, Antony Amend, Bee Gunn, Wayne Law Heidi Schmidt ने "Economic Botany" नामक जर्नल में प्रकाशित लेख "Tibetan Midicine Plurality" में तिब्बत के चिकित्सीय बहुलता का विवरण दिया है।

रामेश बेदी(2003) ने अपनी पुस्तक "जंगल की जड़ी – बूटियाँ" में अनेक जड़ी-बूटियो का उल्लेख किया है | उन्हों ने जड़ी – बूटियों के अनेक पहलू का विश्लेषण किया है जैसे –पौधे का स्वरूप,पौधे का प्राप्ति स्थान,सेवन विधि, पौधे का उपयोग आदि के बारे में विस्तृत रूप से उल्लेख किये हैं |

डी.सी. पाल व एस. के. जैन (1997) ने अपनी पुस्तक "Tribal medicine" में इथ्नोमेडिसियान के बारे में बताते हुये कहा है कि इथ्नोमेडिसियान अध्ययन से पौधों की 1600

3

1. [33] Pal D.C. and S.K. Jain (1998), "Tribal Medicine" Calcutta. Naya Prokash Publication

नई प्रजातियों को पहचाना गया है जिनका प्रयोग दवाइयों के रूप में किया जाता है। भारत की चार प्रमुख जनजातिय समुदायों सन्थाल, मुण्डा, उरांव और लोधा द्वारा पौधों के 98 परिवारों और 298 जेनेरा के अन्तर्गत कुल 343 प्रजातियों का प्रयोग औषधियों के रूप में किया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि डी.सी. पाल व एस. के. जैन नें मुख्य रूप से मानव चिकित्सा की बात की है |

रामेश बेदी (2007) ने अपनी पुस्तक "जंगल के उपयोगी वृक्ष" में अनेक उपयोगी वृक्ष एवं उनके उपयोग के बारे में विस्तृत उल्लेख किया है जिनमें प्रमुख चिकित्सा में उपयोगी वृक्ष इस प्रकार है जैसे – गूलर,त्रिपला,नीम,पीपल,बकायन,बरगद,बहेड़ा आदि वृक्ष के उपयोग के बारे में बताया है |

डॉ. प्रणव कुमार बनर्जी(2003) ने अपनी पुस्तक "होमियोपैथी चिकित्सा विशिष्ट औषधियाँ" में इन्होंने होमियोपैथी के बारे में बातया है | उनका मानना है कि होमियोपैथी का जन्म – जर्मनी के क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुयल हैनिमन (10 अप्रैल 1755 – 2 जुलाई 1843) एलोपैथी के एम.डी.उपाधिधारी ख्यातनाम चिकित्सक थे| एलोपैथिक दवाओं की विषाक्तता से दुःखी होकर उन्होंने एक ऐसी औषध प्रयोग की पध्दति खोज निकली जो विषाक्ततारहित थी, प्रकृति के नियमों पर आश्रित थी और अल्पतम मात्रा में प्रयुक्त होकर पूर्ण आरोग्य प्रदान करने में सक्षम थी | यही पध्दति होमियोपैथी कहलाई

डॉ.एम.सी.वर्मा (2009) ने अपने पुस्तक "प्राकृतिक औषधियाँ" में प्राकृतिक द्वारा चिकित्सा पध्दति के विभिन्न पहतू के बारे में बताया हैं | तथा उनके उपचार के बारे में भी उल्लेख किया है अपनी पुस्तक में |

4

---

[4] **वर्मा,एम.सी.(2009). "प्राकृतिक औषधियाँ".नई दिल्ली: शिवांक प्रकाशन**

अनुसंधान क्षेत्र का चुनाव - चांड़ा गाँव में बैगा जनजातियों में प्रचलित पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली का पता लगाने तथा पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के प्रति उनमे कितनी जागरूकता है यह जानने के लिए इस गाँव का चुनाव किया |

अध्ययन का महत्व –

प्रस्तुत शोध बैगा जनजाति में पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली से संबन्धित है | औषधियों का उपयोग बैगा जनजाति के लोग सदियों से करते आ रहे है | लेकिन आधुनिक चिकित्सा के प्रभाव के कारण इनका उपयोग धीरे – धीरे समाप्त होता जा रहा है | और यह ज्ञान एवं पारंपरिक चिकित्सा आधुनिक दोर पर विलुप्त होते जा रहा है | इस आधार पर इसे विलुप्त होने से पहले इस ज्ञान व पारंपरिक चिकित्सा को दस्तावेज़ के रूप में संकलित करना है | इस दस्तावेजों का प्रयोग अन्य समुदायों के लोगों के लिये भी लाभप्रद हो सकता है इस आधार पर यह शोध अत्यंत महत्व रखता है |

अध्ययन का उद्देश्य –

जनजाति की पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली आधुनिक समय में परिवर्तनशील अवस्था में है इस कारण प्रस्तुत शोध चाँड़ा में किया गया | शोध के उद्देश्य इस प्रकार है –

1. बैगा जनजाति में प्रचलित पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली को समझना |
2. उपचार के लिए प्रयोग की जाने वाली पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली का दस्तावेजीकरण करना |
3. बैगा जनजाति में आधुनिक चिकित्सा का उनकी पारंपरिक चिकित्सा पर प्रभाव का अध्ययन अवलोकन के आधार पर करना |

शोध प्रविधियाँ – शोध प्रविधि से तात्पर्य तथ्य संकलन विधियों से है | एक शोधकर्ता अपने चुने हुए क्षेत्र में कौन-कौन सी विधियों का प्रयोग सूचना एकत्र करने में करता है | इन

विधियों की सहायता से एक शोध कार्य पूर्ण होता है | शोध कार्य करने के दौरान गणनात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही प्रविधियों का प्रयोग प्रस्तुत शोध में किया गया है जो इस प्रकार है -

गणनात्मक पद्धतियां

जो पद्धतियां संख्याओं एवं माप को महत्व देती हैं, उन्हें गणनात्मक पद्धतियां कहते हैं। इसके लिए मैंने अनुसूची, संरचित साक्षात्कार का प्रयोग शोधकार्य हेतु किया है।

गुणात्मक पद्धतियां

गुणात्मक पद्धतियां केवल गुणों को महत्व देती हैं, संख्याओं को नहीं। गुणात्मक शोध प्रविधियाँ जैसे – अर्द्धसंरचित साक्षात्कार, अर्ध्द सहभागी अवलोकन, वंशावली सारणी का प्रयोग, वैयक्तिक अध्ययन, प्रस्तुत शोध में किया गया है |

त्रिभुजीकरण

गुणात्मक व गणनात्मक दोनों ही पद्धतियों का जब एक साथ शोध में प्रयोग किया जाता है, तब इस प्रक्रिया को त्रिभुजीकरण कहते हैं।

अनुसूची

गुड एवं हैट के अनुसार – "अनुसूची प्रायः ऐसे प्रश्नों के समूह का नाम है जिन्हें एक साक्षात्कारकर्ता अन्य व्यक्ति से आमने-सामने की स्थिति में पूछता है तथा उनके उत्तर स्वयं भरता है |(सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान)

[5]प्रस्तुत शोध में अनुसूची का प्रयोग विषय से संबन्धित आंकड़ों के संकलन के लिए किया गया है |

1. [5] महाजन, धर्मवीर.(2012)''सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान''. दिल्ली विवेक प्रकाशन :

साक्षात्कार

साक्षात्कार वह प्रक्रिया है, जिसमें शोधकर्ता किसी विषय पर जानकारी एकत्रित करने के लिए लोगों से बातचीत करता है। जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आन्तरिक जीवन में अधिक या कम काल्पनिकता से प्रवेश करता हैं। उसे साक्षात्कार कहते हैं।

हेडर और लिण्डमैन के अनुसार-:

''साक्षात्कार के अन्तर्गत दो व्यक्तियों या अधिक व्यक्तियों के बीच संवाद मौखिक प्रत्युत्तर होते हैं।''

प्रस्तुत शोध में दो प्रकार के साक्षात्कार का प्रयोग किया गया है

संरचित साक्षात्कार – संरचित साक्षात्कार का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सकों के साक्षात्कार के लिए किया गया |

अर्द्धसंरचित साक्षात्कार - अर्द्धसंरचित साक्षात्कार का प्रयोग औषधी निर्माण की विधि एवं चिकित्सा की प्रणाली जानने के लिए किया गया है |

अर्द्धसहभागी अवलोकन:

किसी भी अनुसंधान में पूर्ण सहभागिता तथा पूर्ण असहभागिता दोनों ही अव्यवहारिक तथा कभकभी असंभव भी होती है, इसलिए गुडे तथा हॉट ने इन दोनों प्रविधियों के समन्वित रूप एवं मध्यवर्ती मार्ग के अनुसरण करने पर बल दिया है, जिसे अर्द्ध सहभागी अवलोकन कहा जाता है।प्रस्तुत शोध में भी अर्द्धसहभागी अवलोकन का उपयोग किया गया है ।

6

[7] **वैयक्तिक अध्ययन -** वैयक्तिक अध्ययन का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के महत्व को जानने के लिए किया गया है |

वंशावली

रिवर्स के अनुसार वंशावली प्रविधि अमूर्त समस्यओं का अन्वेषण विशुद्ध वास्तविक आधार पर सम्भव बना देती है, इसके प्रयोग से व्यक्तियों के जीवनसे संबंधित नियमों, जिनका निर्माण सम्भवततायं नहीं किया है तथा जो निश्चित रूप से अधिक जटिल सभ्यने स्वउन्हो :, अशिक्षित मस्तिष्क की दृष्टि से स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित नहीं है, का निर्माण भी किया जा सकता है। इस प्रकार इसकी महत्ता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध हेतु पारम्परिक चिकित्सकों की जानकारी हेतु वंशावली विधि का भी प्रयोग किया गया है।

निदर्शन

निदर्शन समग्र का एक छोटा अंश है, जो समग्र की आधारभूत विशेषताओं का उचित प्रतिनिधित्व करता है, उसे निदर्शन कहा जाता है।

गुडे एवं हॉट के अनुसार-:

''एक निदर्शन जैसा कि नाम से स्पष्ट है, किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है।''

---

[6] पाण्डेय,गया(2006).."मानवशास्त्रीय अनुसंधान विधि एवं तकनीक"नई दिल्ली: कन्सेप्ट पब्लिशिंग हॉउस .

1. [7] महाजन, धर्मवीर.(2012)''सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान''. दिल्ली विवेक : प्रकाशन

इस प्रविधि के माध्यम से 100 बैगा जनजाति के परिवारों से आंकड़ें एकत्रित किए एवं 10 पारंपरिक चिकित्सकों का साक्षात्कार लिया |

प्राथमिक स्रोत-:

यह क्षेत्रीय स्रोत भी कहलाता है, ये वे श्रोत होते हैं, जिसमें अनुसंधानकर्ता प्रथम बार स्वयं मौलिक तथ्यों को प्राप्त करता है। इस प्रकार अध्ययन विषय के संबंध में ज्ञान रखने वाले जीवित व्यक्ति या घटना का प्रत्यक्ष निरीक्षण ही प्राथमिक स्रोत हैं।

साक्षात्कार व अवलोकन विधिके द्वारा प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया।

द्वितीयक स्रोत -:

ये वे तथ्य होते हैं, जिन्हें शोधकर्तास्वयं एकत्रित नहीं करता, बल्कि उनका संग्रहण पहले से ही किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा किया जा चुका होता है।

मैंने द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, इन्टरनेट, शोध पत्रिकाओं इत्यादि का प्रयोग किया।

क्षेत्र एवं जनजाति परिचय -

मध्य प्रदेश, उत्तर पश्चिम में राजस्थान से, उत्तर में उत्तर प्रदेश से, पूर्व में छत्तीसगढ़ से, दक्षिण में महाराष्ट्र से और पश्चिम में गुजरात से घिरा है। मध्य प्रदेश की टोपोग्राफी मिश्रित है और इसमें मैदानी इलाके और पहाड़ दोनों शामिल हैं। इस राज्य में तीन प्रमुख मौसम होते हैं नवंबर से फरवरी तक सर्दी, मार्च से मई तक गर्मी और जून से सितंबर तक मानसून। सर्दियों के दौरान औसत तापमान 10 डिग्री से 27 डिग्री सेल्सियस रहता है। गर्मियों में तापमान बहुत ज्यादा रहता है, जिसमें औसत 29 डिग्री और अधिकतम 48 डिग्री तक पहुंच जाता है। मानसून के मौसम में औसतन तापमान 19 से 30 डिग्री सेल्सियस रहता है। मध्य प्रदेश में बारिश का सालाना औसत 1200 मिमीहै ., जिसमें से 90 प्रतिशत वर्षा मानसून में होती है। राज्य की राजधानी भोपाल है ।

आबादी - मध्य प्रदेश भारत के दिल में स्थित है। 'एमपी' के नाम से पहचाने जाने वाले इस राज्य का क्षेत्र 3,08,244 वर्ग किमीमें फैला है ., जिससे यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य बनता है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल है। इंदौर यहां का सबसे बड़ा शहर है, जबकि जबलपुर राज्य का सबसे महत्वपूर्ण व्यवसायिक केंद्र है। आबादी के मान से मध्य प्रदेश भारत का छठा सबसे बड़ा राज्य है। यह राज्य अपनी सीमाएं उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात और राजस्थान जैसे राज्यों से साझा करता है।

भौगोलिक स्थिति - राज्य के भूगोल में मुख्य रुप से धरती पर इसकी स्थिति, क्षेत्र एवं क्षेत्र वार भाग, नदियां, मौसम, मिट्टी, फसलें, टोपोग्राफी और जीव, वनस्पति शामिल हैं। 22.42 डिग्री उत्तर और 72.54 डिग्री पूर्व की भौगोलिक स्थिति के साथ मध्य प्रदेश मध्य भारत में आता है। मध्य प्रदेश उत्तरपश्चिम में राजस्थान से, उत्तर में उत्तर प्रदेश से, पूर्व में छत्तीसगढ़ से, दक्षिण में महाराष्ट्र से और पश्चिम में गुजरात से अपनी सीमाएं बांटता है।

शिक्षा - मध्य प्रदेश की शिक्षा प्रणाली बहुत विकसित है। मध्य प्रदेश की पूरी स्कूली शिक्षा तीन स्तरों पर बंटी हैप्राथमिक -, माध्यमिक और उच्चतर। मध्य प्रदेश में पा ॅलिटेक्निक, औद्योगिक, कला और शिल्प, संगीत आदि के भी स्कूल हैं। इसके अलावा 12 स्टेट यूनिवर्सिटी हैं। इस लिए ही राज्य की एकतिहाई आबादी शिक्षित है। उज्जैन और सागर में - स्थित स्कूल सबसे पुराने हैं और शिक्षा की गुणवत्ता के कारण पूरे पश्चिमी क्षेत्र मेंसबसे अच्छे हैं। हाल ही में मध्य प्रदेश की शिक्षा प्रणाली में विभिन्न कार्यशाला और प्रशिक्षण सत्र शुरु किए गए ताकि स्कूल छोड़ चुके लोगों को फिर से शिक्षा की ओर लाया जा सके।

भाषाएँ - क्योंकि मध्य प्रदेश को भारत का दिल कहा जाता है, यह स्वाभाविक है कि मध्य प्रदेश की सभी प्रचलित बोलियां हिंदी में होंगी। उत्तर भारत और मध्य भारत में रहने वाले ज्यादातर लोग हिंदी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। हिंदी को भारत सरकार द्वारा आधिकारिक भाषा का भी दर्जा मिला हुआ है। हिंदी में फारसीअरबी लिपी के साथ देवनागरी लिपी का - मिश्रण है। भारत के अलावा हिंदी पाकिस्तान, नेपाल और फिजी में बोली जाती है।

अर्थव्यवस्था - मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि है। आधे से ज्यादा भूमि क्षेत्र कृषि क्षेत्र हैं, हालांकि इसका वितरण टोपोग्राफी, वर्षा और मिट्टी के कारण काफी असमान है। मुख्य कृषि योग्य क्षेत्र चंबल घाटी, रीवा पठार और छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्र में पाया जाता है।

नदी जनित जलोड़ मिट्टी वाली नर्मदा घाटी एक और उपजाउ क्षेत्र है। यहां की सबसे खास फसलें चावल, गेंहू, ज्वार, मक्का, दालें और मूंगफली हैं। चावल मुख्यतः पूर्व में उगाया जाता है जबकि पश्चिम में गेंहू और ज्वार प्रमुख हैं। यह राज्य भारत का सबसे बड़ा सोयाबीन उत्पादक है। अन्य फसलों में अलसी, तिल, गन्ना और कपास और पहाड़ी क्षेत्र में उगने वाले अवर, बाजरा शामिल हैं। राज्य सबसे बड़ा अफीम उत्पादक भी है जो पश्चिम के मंदसौर जिले और 'मारिजुआना' खंडवा के दक्षिण पश्चिम जिले में उगती है।

डिंडौरी जिला

डिंडौरी जिला मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा से लगा हुआ है। डिंडौरी जिले की सीमा पूर्व में शहडोल, पश्चिम में मंडला, उत्तर में उमरिया और दक्षिण में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर से लगी हुई है। यह जबलपुर से 144 कि॰मी॰ की दूरी पर है। डिंडौरी की मंडला से दूरी 104 तथा अमरकंटक की दूरी 88 कि॰मी॰ है। यह 81.34 डिग्री देशांत तथा 21.16 डिग्री अक्षांश में स्थित है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 1100 मी. है। यह मैकाल पर्वत माला पर है। ड़िंडौरी में कई ऐतिहासिक स्थान हैं। इनमें लक्ष्मण माडव, कुकरामठ, कलचुरी काली मंदिर आदि प्रसिद्ध हैं। इस जिले का गठन 25 मई 1998 को किया गया। इसमें 927 गांव शामिल हैं। जिले में 7 विकासखंड डिंडौरी, शाहपुरा, मेहंदवानी, अमरपुर, बजांग, करंजिया और समनपुर है। जिले के 927 गांवों में से 899 गांवों में बैगा जनजाति के लोग निवास करते हैं। सन 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 5,79,312 है। यहां 1000 पुरुषों पर 994 महिलाएं हैं।

मशहूर इतिहासकार और शोधकर्ता डॉ. हैरी वॉरियर एल्विन 1940 में डिंडोरी आए थे। वे करंजिया विकासखंड के रैतवार गांव तक पहुंचे और अगले 12 साल तक घने जंगलों में बसे आदिवासियों की संस्कृति और उनके इतिहास को जानने की कोशिश करते रहे। डिंडोरी के बैगा आदिवासियों के रहने की जगह तक पहुंचने वाले वे शायद पहले शख्स थे। कहते हैं कि उन्होंने वहां कोसीबाई नाम की बैगा महिला से शादी की।

अगर हम 2011 की जनगणना के आंकड़ों को देखें तो पता चलता है कि डिंडोरी जिले की 16.90 लाख जनसंख्या में केवल 8 फीसदी के पास टेलीविजन और 15 फीसदी के पास ट्रांजिस्टर रेडियो है। टेलीफोन की सुविधा भी 15 प्रतिशत परिवारों के पास है। जिले में 64

प्रतिशत से ज्यादा परिवारों के पास सूचना हासिल करने का कोई साधन नहीं है। डिंडोरी मूल रूप से ग्रामीण जिला है, जहां की 6.71 लाख से ज्यादा आबादी गांवों में और केवल 32,328 लोग ही शहरों में रहते हैं।

अध्ययन संबंधित क्षेत्र -

बैगा चक जो चांड़ा क्षेत्र के अंतर्गत आता है | बैगा चक मध्यप्रदेश राज्य के डिंड़ौरी जिले से करीब 66 किलोमीटर जबलपुर–अमरकंटक मार्ग पर गाड़ासराई नामक कस्बे से 36 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है | सम्पूर्ण बैगा चक क्षेत्र डिंड़ौरी जिला के विकास खण्ड बजाग, करंजिया एवं समनापुर के अंतर्गत आता है |

जनजाति परिचय

मध्य प्रदेश की आदिम जनजातियों में से एक है बैगा जनजाति |यह मध्य प्रदेश की तीसरी बड़ी जनजाति है | इस जनजाति की उपजातियों में नरोतिया, भरोतिया, रायमैना, कंठमैना और रेमैना आदि प्रमुख हैं | बैगा जनजाति में संयुक्त परिवार पाया जाता है |

उत्पत्ति – चारों ओर लहराते जल के बीच एक काली चट्टान थी जिसमें से बाँस का झुरमुट निकला था। बाँस के एक पोले हिस्से से बैगिन और दूसरे से बैगा पैदा हुआ। बैगिन को सपने में पातालवासी धरती दिखी। अगले दिन बैगा ने कारीमन कौए को धरती का पता लगाने के लिये भेजा। कौआ धरती ले आया और तब बैगा ने धरती के बीज को पानी में छिड़का। इस बीच बैगा-बैगिन के एक लड़की और एक लड़का पैदा हो चुके थे। वे बाँस से नीचे धरती पर उतरे लेकिन वह अभी भी डगमगा रही थी। बैगा-बैगिन को समझ में आ गया कि धरती बिना पूजा, बिना मोल चुकाये स्थिर नहीं होगी। अपने बच्चों का ही बलिदान देने की गरज से वे उन्हें बाँस की ढूटी में रख, चल पड़े। रास्ते में उनकी भेंट पहले मुर्गा-मुर्गी, फिर बकरा-बकरी और फिर-सुअर-सुअरनी से हुई। उनके उद्देश्य जान कर सभी जानवरों ने उन्हें अपने बच्चे धरती को चढ़ाने के लिये दिये ताकि धरती पर मानव बीज बचा रहे। बैगा-बैगिन ने अगरिया, तामासुर, काँसासुर भाईयों से लोहे, ताम्बे और काँसे की कीले बनवाई। उन्हें जगा कर नौ खण्डी धरती पर ठोंका। फिर धरती को पूजवन दी और इस तरह यह धरती पानी की सतह पर स्थिर हुई।

रंग – रूप एवं वेषभूषा – बैगा जनजाति को प्रकृति पुत्र बैगा भी कहा जाता है बैगा पुरुषों की त्वचा का रंग काले या बादामी रंग के होते है आंखे कम गोल व होंठ मोटे काले रंग के और नाक चौड़ी होती है बैगा पुरुषों के बाल जीवन में एक बार ही काटते हैं उनके जन्म के समय जिसे झालर कहते है | इनके बाल घुंघराले व काले होते है | बैगा महिलाओं के बाल भी काले होते है उनके त्वचा का रंग भी काला होता है |

वेशभूषा बैगा पुरुष लंगोटी (पटका) व सिर पर पगड़ी बांधते है | बैगा स्त्रियाँ साड़ी पहनती है जिसे लुगरा कहते है और रंग – बिरंगे ब्लाउज भी पहनती है |

आवास – इनके घर अधिकांशतः दूर – दूर होते है ये लोग घर खुद से बनाते है दीवारें बांस की टटिया बनाकर ऊपर से मिट्टी छाप देते है और गोबर से लीपते है समय – समय पर पीली मिट्टी या सफेद मिट्टी से दीवालों की पुताई करते है | इनके घरों में खिड़किया नहीं होती दरवाजों में बांस का टटिया लगाते है घर की छत घास फूस की होती है और कही कही पर खपरैल की होती है |

भोजन – बैगा जनजाति के लोगो का पेज प्रमुख भोजन है ये लोग कोदों, कुटकी, मक्का, गेहूं का पेज पीते है अधिकांशतः भोजन के लिए ये लोग वनों पर निर्भार होते है |

भाषा – बैगा जनजाति की प्रमुख बोली बैगानी है |

निवास स्थान – डिंडोरी, मंडला, बालाघाट, शहडोल में निवास करते है |

गोत्र – मरावी, धुर्वा, आदि गोत्र बैगा जनजाति में पाये जाते है |

टोटम – सरड़िया सरई वृक्ष से, कचनरिया कचनार वृक्ष से, बंरगिया बंरगा वृक्ष से, आमगरिया आम वृक्ष से, ककुरिया कुत्ता से, कुसरिया खुसरु(उल्लू पक्षी) से, पड़िया पड़िया(भैंस का नवजात शिशु), इस प्रकार बैगा जनजाति के लोग अपना टोटम पेंड-पौधे या पशुओं को मानते है |

आजीविका के साधन – कृषि, मजदूरी, शिकार, सहद का व्यवसाय, पशुपालन, जंगली वनोपज प्रमुख आजीविका के साधन है |

देवी – देवता – दूल्हादेव, बूड़ादेव, भवानी माता, ठाकुर देव, नरबदामाई, रात माई, मरका देव, बूढ़ा नागदेव, खैरमाई, धरती माता, सूखा देव, आदि देवी देवता है |

विवाह प्रथा – बैगा जनजाति में लमसेना, लामिया और लामझेना प्रथा प्रचलित है |

आभूषण – बैगा जनजाति के लोग एल्युमीनियम, पीतल और ताँबे के आभूषण पहनते हैं |**लोक नृत्य एवं गीत** – सैला नृत्य(दशहरे के समय), करमा, रीना नृत्य, लोक गीत सुआ गीत है |

गुदना – बैगा जनजाति में महिलाओं में शरीर अलंकरण के रूप में गुदना का विशेष महत्व है एवं यह एक सशक्त परम्परा भी है इनकी ऐसी मान्यता है कि गुदना के कारण ही इनकी स्वर्ग में पहचान रहती है और मृत्यु के बाद यह चिन्ह ही उनके साथ जाते है यदि बैगा महिलाएं गुदना नहीं गुदवाती तो उसे भगवान के सामने सब्बल से गुदवाना पड़ता है |

गुदना के द्वारा गठिया बात, सिरदर्द और घेंघा जैसे रोग ठीक हो जाते है

त्यौहार – हरियाली अमावस्या, नवाखाई, बिदरी पूजा, छेरता, जवारा और फाग आदि प्रमुख त्यौहार है |

कठिनाइयाँ एवं सीमाएं – शोध कार्य के समय शोधकर्ता को शोध के दौरान अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मुझे भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा | लेकिन इस सभी चुनौतियों को नजर अंदाज करते हुये मैंने अपना शोध कार्य करने का प्रयास किया | प्रस्तुत शोध के दौरान अनेक कठिनाइयाँ एवं सीमाओं का सामना करना पड़ा जो इस प्रकार हैं |

- शोध क्षेत्र में पहुचने के लिए साधन का अभाव |
- भाषा की जानकारी का अभाव |
- शोध क्षेत्र में लोगों के पास समय का अभाव |
- पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत कुछ निषेध होते है इस कारण प्रत्येक पध्दतियों को जान पाना संभव नहीं हो पाया |
- अधिकांश औषधियों का स्थानीय नाम ही ज्ञात हो पाया है उनका हिन्दी नाम ज्ञात नहीं हो सका |